सामाजिक विज्ञान के शिक्षण-अधिगम में स्थानीय हुनरों का समावेशन

राहुल मिश्रा*
राज कुमार श्रीवास्तव**

देश को समृद्ध एवं सुदृढ़ बनाने के लिए नागरिकों की सृजनात्मक अंत: शक्ति की पहचान करना और उसका विकास करना आवश्यक है। क्योंकि सृजनात्मकता एक दुर्लभ प्रतिभा है, जो प्राय: सभी लोगों में होती है। आज सृजनात्मकता के प्रति हमारी समझ व्यापक हुई है। जो कुछ विशेष लोगों— कलाकार, वैज्ञानिक, कवि, आविष्कारक तक ही सीमित नहीं है। यह एक साधारण व्यक्ति में भी होती है, जैसे— व्यक्ति मिट्टी के बरतन बनाता है, बढ़ई का कार्य करता है या सोने के आभूषण बनाने का कार्य करता है; वह अपने कौशलों (हुनरों) के द्वारा अपने उत्पादों में गुणवत्ता लाता है। यह सब सृजनात्मकता के जीवंत उदाहरण हैं। इसी सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' में भी हस्त एवं लोक कला को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जोड़ने और उनसे संबंधित गतिविधियों को कक्षा में प्रस्तुत करने पर विशेष बल दिया गया है। इस लेख में वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा में उपयोग की जा रही सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण-अधिगम में सृजनात्मक जीवन कौशलों की पहचान तथा उसको बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला गया है। इसमें उच्च प्राथमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत, इतिहास (हमारे अतीत) की पाठ्यपुस्तकों की विषय-वस्तु में उपयुक्त हुनरों की खोज कर उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। अध्यापक इन उदाहरणों से कक्षा में पढ़ाई जाने वाली विषय-वस्तु में हुनरों की पहचान कर विद्यार्थियों को पहचाने गए हुनरों से जुड़े कौशलों एवं उनका सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक महत्व समझाएँगे। साथ ही, इस प्रक्रिया में विभिन्न हुनरों से जुड़े स्थानीय लोगों को विद्यालय में आमंत्रित कर विद्यार्थियों के बीच चर्चा कराएँगे। इस प्रकार अध्यापक विद्यार्थियों के बीच हुनरों पर चर्चा, प्रदर्शन, कार्यशाला एवं फ़ील्ड विज़िट आदि के द्वारा व्यापक दृष्टि व रोचकता प्रदान कर सकेंगे।

प्रत्येक मनुष्य में सृजन क्षमता होती है और उस क्षमता को वह स्वयं विकसित करता है। विद्यालय एवं अध्यापकों की यह ज़िम्मेदारी है कि वह विद्यार्थियों में उपयुक्त तरीकों एवं प्रक्रियाओं के द्वारा इस सृजन क्षमता को पहचाने एवं भाषाएँ विकसित करने के अवसर प्रदान करें। भारत कला, धर्मनिरपेक्षता और सांस्कृतिक विविधता का एक अद्भुत उदाहरण है, जिसमें देश के प्रत्येक भाग में लोक एवं शास्त्रीय गायन, नृत्य, बोली एवं भाषाएँ, संगीत, हस्तकला, शिल्पकला आदि सृजनात्मक गतिविधियाँ एवं कार्य किए जाते हैं। इन सृजनात्मक एवं हस्तकला से जुड़े कार्यों एवं गतिविधियों के अध्ययन से हमारे युवा विद्यार्थी स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनेंगे।

**प्रवक्ता*, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उत्तर-पूर्व, दिलशाद गार्डन, दिल्ली 110 095
***असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, पाठ्यक्रम एवं शिक्षणशास्त्र विभाग, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उत्तर-पूर्व, दिलशाद गार्डन, दिल्ली 110 095

सृजनशीलता मनुष्य का स्वाभाविक गुण है, इसलिए वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सृजनात्मक कार्यों से जुड़ा होता है। भाषा का विकास भी सृजनशीलता का ही विस्तार है। मध्यप्रदेश की भीमबेटका की गुफ़ाओं में पत्थरों पर उकेरी गई चित्रकारी इस बात का प्रमाण है कि भाषा न होने पर भी व्यक्ति स्वयं को सृजनशीलता के माध्यम से व्यक्त कर सकता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण और बहुभाषी देश में लोक कलाओं, लोकगीतों और स्थानीय हुनरों (कौशलों) का विशेष महत्व है। प्रत्येक प्रदेश अपनी बहुरंगीय विविध लोक कलाओं से अपनी स्पष्ट पहचान बनाए हुए है। शिक्षा पर भी इस वैविध्यता का प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक बच्चा सृजनात्मक होता है। अत: बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा में निखार लाने के लिए उन्हें हुनरमंद लोगों के पास लाना होगा। हस्तशिल्प एक हुनर आधारित उत्पादन प्रक्रिया है। इसमें उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री स्थानीय एवं पर्यावरण के अनुकूल होती है। स्थानीय हुनर, एक जीवंत कौशल है, जो कला और कार्य दोनों पाठ्यचर्या क्षेत्रों के लिए समृद्ध व आवश्यक संसाधन है। जो हाथ से काम करने, सामग्री व तकनीकी का उपयोग करने, प्रक्रियाओं को समझने तथा संसाधन संपन्न होने में पहल करता है। ये अनुभव बच्चों की समावेशी शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है।

अध्यापकों द्वारा स्थानीय हुनर को विषय-वस्तु से जोड़कर विद्यार्थियों को सृजनात्मक तथा सौंदर्यबोध की गतिविधि के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। शिक्षा में रंगमंच सीखने की एक शक्तिशाली विधा है, जिसे विषय-वस्तु का रंगमंचन कर सिखाया जा सकता है। यह अनुभव बच्चों की क्षमताओं एवं कौशल पहचानने के लिए उपयोगी है। इसलिए कला और शिल्प को शिक्षा से जोड़ा गया है।

साधारणतः सामाजिक विज्ञान या हिंदी के पाठ लोक कहानी, लोक कला या स्थानीय कामकाज से जुड़ी कहानियों से प्रेरित होते हैं। पाठ के अंतर्गत मिट्टी के बरतन बनाना, लकड़ी पर नक्काशी करना, मूर्ति कला आदि की शिक्षा दी जाती है, जो सामान्यत: जन जीवन से जुड़े कौशलों पर आधारित होती है। ऐसे पाठों में दिए गए कार्यों के प्रति हुनर की पहचान कराने के लिए अध्यापक कक्षा में चर्चा कर सकते हैं, जिससे उस कार्य के प्रति विद्यार्थियों में रोचकता के साथ समझ पैदा होगी।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्धारण देश की वैविध्यता तथा विद्यार्थियों को मानवीय एवं कुशल नागरिक बनने की क्षमताओं व कौशलों में सक्षम बनाने हेतु उनकी मानसिक क्षमता के अनुसार किया जाता है। जिसमें स्थानीय हुनरों को भी शामिल किया जाता है। इसी क्रम में इस लेख में उच्च प्राथमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत इतिहास की विषय-वस्तु को स्थानीय हुनर से समाकलित कर प्रस्तुत किया गया है। जिससे इतिहास की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को और अधिक समृद्ध एवं रुचिकर बनाया जा सकता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी स्थानीय हस्त कौशल, ज्ञान, स्थानीय विशेषज्ञता आदि से विद्यार्थियों को परिचित कराने की अनुशंसा की गई है। जो इस प्रकार है —

- स्कूलों या स्कूल कॉम्प्लेक्स को विद्यार्थियों को लाभान्वित करने और स्थानीय ज्ञान

और विशेषज्ञता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न विषयों में पारम्परिक, स्थानीय कला, व्यावसायिक शिल्प, उद्यमिता, कृषि या कोई अन्य विषय, जहाँ स्थानीय विशेषज्ञता उपलब्ध है, में स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों या विशेषज्ञों को विशेष प्रअध्यापक के रूप में रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

- कृषि शिक्षा से संबंधित विषयों को पुनर्जीवित किया जाएगा। कृषि शिक्षा की प्रक्रिया को ऐसे व्यावसायिक व्यक्तियों के विकास के लिए परिवर्तित किया जाएगा जो स्थानीय ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान और उभरती हुई तकनीकों को समझ सकें और उसका उपयोग कर सकें तथा इसके साथ-साथ महत्वपूर्ण मुद्दे, जैसे— भूमि की गिरती उत्पादन शक्ति, जलवायु परिवर्तन, हमारी जनसंख्या के लिए पर्याप्त भोजन की आवश्यकता आदि को लेकर जागरूक हों।
- उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों, लेखकों, हस्तकलाकारों एवं अन्य विशेषज्ञों को स्थानीय विशेषज्ञता के विभिन्न विषयों में विशिष्ट प्रअध्यापक के रूप में स्कूल से जोड़ना तथा पाठ्यचर्या, मानविकी, विज्ञान, कला, हस्तकला और खेल में पारंपरिक भारतीय ज्ञान का समावेश करना, जब भी ऐसा करना प्रासांगिक हो। उच्चतर शिक्षा की पाठ्यचर्या में अधिक लचीलापन प्रदान कर अपने लिए कार्य का चुनाव करने का अधिक अवसर देना।
- स्थानीय संगीत, कला, भावों एवं हस्त शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि विद्यार्थी जहाँ अध्ययन कर रहे हों, वहाँ की संस्कृति और स्थानीय ज्ञान को जान सकें। उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों एवं हस्तशिल्प में कुशल व्यक्तियों को अतिथि अध्यापक के रूप में नियुक्त किया जाएगा। कलाकार उसी संस्थान के कॉम्प्लेक्स में संग्रहालय का विकास करें, जिससे कि विद्यार्थी कला, सृजनात्मकता तथा क्षेत्र की समृद्धि को बेहतर रूप से जान सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में व्यावसायिक शिक्षा का महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। आवासीय शिक्षा से जुड़ी सामाजिक पाठ्यक्रम की स्थिति को दूर करना, इसके लिए आवश्यक होगा कि समस्त शिक्षण संस्थान, जैसे— स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रम को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करें। प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े कौशलों को सीखे और अन्य कई व्यवसायों से परिचित हो। ऐसा करने से वह श्रम की महत्ता और भारतीय कलाओं एवं कारीगरी सहित अन्य हुनर व कौशलों के प्रति जागरूक होगा और विभिन्न व्यवसाय के महत्व से परिचित होगा। वर्ष 2025 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान किया जाएगा। इसी को ध्यान में रखते हुए, इस लेख में सामाजिक विज्ञान विषय के इतिहास (*हमारे अतीत*) की विषय-वस्तु को स्थानीय हुनरों से जोड़ने का प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में स्थानीय हुनरों को कैसे सीखा जाए? इस हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं—

- सर्वप्रथम हुनर की पहचान आवश्यक है।
- हुनर वह कार्य है, जो परंपरागत ढंग से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते हैं।

- हुनर अपने आप में परिपूर्ण और अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम माध्यम है।
- हुनर में लगे श्रम की पहचान करना तथा श्रम के प्रति आदर और सम्मान का भाव पैदा करना।
- वर्तमान में वैज्ञानिक तरीके से होने वाले उत्पादन भी हुनर से जुड़े हुए हैं, को समझाना।
- पाठ की विषय-वस्तु को आसपास होने वाले हुनर से जुड़े व्यवसायों एवं कौशलों से जोड़ना तथा उसकी उपयोगिता समझाना।
- पाठों में दिए गए हुनरों के माध्यम से विद्यार्थियों को उद्यमशील बनने के लिए प्रेरित करना तथा विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाना।

उच्च प्राथमिक स्तर के इतिहास की विषय-वस्तु के साथ स्थानीय हुनरों का समेकन— कुछ उदाहरण

इसी संदर्भ में अध्यापकों के लिए कुछ कार्यकलाप सुझाए गए हैं, जैसे—

- पाठ पढ़ाते समय बच्चों को सक्रिय रूप से सहभागिता करने के लिए प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों में खोज एवं चिंतन क्षमता विकसित करने के लिए अधूरी सूचना को पूरी करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- उनके कलात्मक विचारों का आदर करना।
- विद्यार्थियों को कक्षा में चर्चा के दौरान चित्रकारी, कल्पनात्मक कथाओं आदि के माध्यम से जैसा भी संदर्भ हो, विस्तारपूर्वक बताने के लिए कहना।
- दूसरों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों को नए संदर्भ में पुनर्गठित करने, पुनः संजोने और देखने के लिए कहना।
- कक्षा में पाठगत समस्याएँ उत्पन्न करना और उनके समाधान के लिए विद्यार्थियों को मार्गदर्शित करना।
- विषय वस्तु को वर्तमान दैनिक जीवन से जोड़ना।

कक्षा 6 में 'आरंभिक मानव की खोज' पाठ के अंतर्गत मानव के विकास क्रम को दर्शाया गया है। जिसमें बताया गया है कि आज की विकसित अवस्था में मानव कैसे पहुँचा? प्रारंभिक मानव ने रहने के लिए गुफ़ाओं का उपयोग किया और खाने-पीने के लिए पशु-पक्षियों का शिकार किया था। आग की खोज के बाद भोजन भूनकर खाने लगे। शिकार के लिए वह लंबी यात्रा भी करते थे। भीमबेटका (मध्य प्रदेश) की गुफ़ाओं में मिले चित्रकारी के प्रमाण, उनकी भाषाई अभिव्यक्ति का एक माध्यम हैं, साथ ही आरंभिक मानव के मनोरंजन का साधन भी हैं। यहाँ पर हुनर क्रियाकलाप के अंतर्गत विद्यार्थियों को चित्रकारी के बारे में बताया जा सकता है कि चित्रकारी एक संचार का माध्यम भी है। आरंभिक मानव के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले औज़ार या मिट्टी के बरतन आदि की उपयोगिता तथा उन्हें बनाने की विधियाँ आदि हुनर सीखने में सहायक हो सकती हैं।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (कला के माध्यम से सीखना)

विद्यार्थियों को मिट्टी से जुड़े हुनर सीखने के लिए मिट्टी के बरतन आदि बनाने का कार्य कक्षा में कराया जा सकता है। विद्यार्थी मिट्टी के बरतन बनाएँ और उनकी जीवन में उपयोगिता के बारे में लिखें। इस क्रियाकलाप से विद्यार्थियों में इस हुनर के प्रति संवेदना उत्पन्न होगी, साथ ही वे स्वयं की आरंभिक मानव से तुलना कर सकेंगे। लोहे के औज़ार बनाने की कला लोहार द्वारा अच्छे से समझाई जा सकती है। साथ ही, विद्यार्थियों को यह समझाना कि किस तरह पत्थर के औज़ारों से आज हम विभिन्न तरह के लोहे के औज़ारों तक पहुँचे हैं? इससे जुड़ी गतिविधि

के रूप में विद्यार्थी घर में पाए जाने वाले लोहे के औज़ारों की एक सूची तैयार करके उनकी उपयोगिता को लिख सकते हैं।

'खुशहाल गाँव और समृद्ध शहर' नामक पाठ भी सामाजिक विज्ञान विषय की कक्षा 6 की विषय-वस्तु है। पाठ की शुरुआत लोहे की खोज से शुरू होती है। 2500 साल पहले लोहे की खोज ने कृषि व्यवस्था में एक क्रांति ला दी थी। धान की रोपाई ने कृषि उत्पादन को बढ़ा दिया था। लोहे के औज़ारों से कुएँ, जलाशय, नहरों का निर्माण हुआ और लोहे के फाल ने गहराई तक जुताई करके कृषि को उपजाऊ बना दिया। वहीं लोहे की कुल्हाड़ी से जंगल काटकर खेत बनाए जाने लगे। शिल्पकारी के उद्भव ने नगरों को विस्तार दिया और नगर अनेक गतिविधियों के केंद्र बने, जिसमें मथुरा बेहतरीन मूर्तियाँ बनाने का केंद्र बना। साथ ही, बौद्ध और जैन मंदिरों का निर्माण हुआ।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (कला अध्ययन)

अध्यापक द्वारा इस विषय-वस्तु से विद्यार्थियों को यह बताने का प्रयास किया जा सकता है कि कुछ विशेष वस्तुओं की खोज से, जैसे— लोहे के आविष्कार ने शहरों के विकास में किस तरह योगदान दिया और लोहे की खोज से पूर्व जीवन निर्वाह के साधन कैसे थे? इसके साथ ही विद्यार्थियों को स्थानीय लोहारगरी के द्वारा लोहे से बने सामानों की पहचान करवाएँ और उसकी उपयोगिता भी बताएँ। साथ ही, इन सामानों को प्राचीन काल में बने लोहे के सामानों से तुलना करने का प्रयास करें।

पाठ से संबंधित हुनर सिर्फ़ कारीगिरी, बुनाई गिरी, लोहारगरी, मूर्तिकारी आदि एक कला ही नहीं हैं, बल्कि नगरों की विकास यात्रा से जुड़े हैं, इस पर भी अध्यापक एवं विद्यार्थी चर्चा करें। इस विकास यात्रा में लोहे और रोपाई की विधि ने कैसे गाँव को नगरों में परिवर्तित कर दिया। अध्यापक, शिल्पकार या लोहारगरी की कार्यशाला विद्यालय में आयोजित कर विद्यार्थियों को इस शिल्प की विशेषताएँ तथा श्रम के महत्व से अवगत करा सकते हैं। अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को मूर्तिकला से संबंधित क्षेत्रों और शहरों से परिचित कराना तथा उन क्षेत्रों में मिलने वाले पत्थरों की उपलब्धता ने इस कला को कैसे जन्म दिया? यह बताना। विद्यार्थियों को शिल्पकला और लोहारगरी की विकास यात्रा समझाना। विद्यार्थी इन कलाओं की सूची बनाकर वर्तमान युग में उनके महत्व और उपयोगिता पर चर्चा कर सकते हैं। अध्यापक विद्यालय में अपने स्थानीय क्षेत्र से जुड़े हुनर या लोक कला पर कार्यशाला कराएँ, जिससे विद्यार्थियों में कलाओं के प्रति रुचि बढ़ेगी और जिससे उनमें इन व्यवसायों को अपने जीवन-निर्वाह का साधन बनाने की समझ विकसित होगी।

कक्षा 7 के पाठ 'मध्यकालीन भारत में इस्लाम' में, भारत में प्रौद्योगिकी के आगमन से आए परिवर्तन की चर्चा की गई है, जैसे— सिंचाई के लिए रहट का प्रयोग होने लगा, भाषा में अनेक बदलाव आए, भवन निर्माण कला में बदलाव आया और इतिहास लेखन की कला विकसित हुई। तुर्कों की सत्ता स्थापित होने के बाद भारत में नई तकनीक, जैसे— तकली से सूत कातना, घोड़े की लोहे की नाल, इतिहास लेखन की प्रक्रिया आदि शुरू हुई।

कक्षा 7 के 'नए राजा और उनके राज्य' पाठ में चोल मंदिर के आसपास विकसित हुई बस्तियों पर चर्चा की गई है। यह मंदिर शासकों और अन्य लोगों

द्वारा दान में दी गई भूमि से ही संपन्न हो गए थे। इस भूमि की उपज से मंदिर के लिए जो काम करते थे, जैसे— पुरोहित, मालाकार, संगीतकार इत्यादि पर खर्च किया जाता था। मंदिर सिर्फ़ पूजा, आराधना के स्थान ही नहीं थे, बल्कि वे आर्थिक-सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के केंद्र भी थे। मंदिर के साथ जुड़े हुए शिल्पों में कांस्य प्रतिमाएँ बनाने का काम सबसे विशिष्ट था।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (कांस्य कला)

अध्यापक कक्षा में कांस्य प्रतिमा से जुड़े कारीगर और कच्चे माल की चर्चा करें तथा अभी किन क्षेत्रों में कांस्य प्रतिमा बनाने का कार्य होता है, उन्हें मानचित्र में दर्शाएँ। दक्षिण भारत में मंदिरों के आस-पास स्थित होने वाले गाँव की योजना पर भी चर्चा करें।

कक्षा 8 के 'कैसे, कब और कहाँ' पाठ के अंतर्गत प्रस्तुत फ़ोटोग्राफ़, नक्शे, विज्ञापन, चित्र, अभिलेखगार के फ़ोटो और मानचित्रण ऐसी सहायक सामग्रियाँ हैं, जो ब्रिटिश कालीन इतिहास लेखन में अहम भूमिका अदा करती हैं। वर्तमान, भूतकाल में हुए अभ्यास पर आधारित होता है। कोई भी कार्य जो आज मशीनों के द्वारा कम मूल्य और कम समय में आसानी से हो जाता है, यदि उन कार्यों की शुरुआत देखें तो कुछ हुनरमंद लोगों द्वारा सीमित साधनों के द्वारा कड़ी मेहनत से किया जाता था।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (खुशनवीसी और चित्रकारी)

अध्यापकों द्वारा कक्षा में हुनरों, जैसे— खुशनवीसी, चित्रकारी एवं विज्ञापन की चर्चा विषय-वस्तु से जोड़कर करना तथा कक्षा में खुशनवीसी और चित्रकारी की कार्यशाला भी आयोजित करना। इस प्रकार विद्यार्थियों को हुनर में लगे श्रम के प्रति संवेदनशील बनाना तथा उन्हें अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। अध्यापक विद्यालय के आस-पास जहाँ पर लकड़ी या पत्थरों पर खुशनवीसी के काम हो रहे हों, उन्हें विद्यार्थियों को दिखाएँ और उन शिल्पकारों को विद्यालय में बुलाकर कार्यशाला आयोजित करें।

कक्षा 8 में 'आदिवासी, दीकू और एक स्वर्ण युग की कल्पना' नामक पाठ में एक चित्र में महिलाएँ पंडानु की पत्तियाँ इकट्ठा कर रही हैं, जिससे पत्तल बनाई जाती है। पत्तल बनाना एक हुनर है, अत: इस हुनर का परिचय विद्यार्थियों को कराना। आदिवासी लोग व्यावसायिक गतिविधि के रूप में पत्तल बनाने का काम करते थे तथा वे इलाज के लिए जड़ी-बूटियों को इकट्ठा करना और बाज़ार में बेचने का कार्य करते थे। इसके अलावा जंगली खाद्य पदार्थ, जैसे— शहद, कुसुम और पलाश को रंगाई के लिए बेचने का काम करते थे। इस पाठ में दिए गए विभिन्न चित्रों में आदिवासी समुदाय द्वारा किए जाने वाले कार्यों को दर्शाया गया है, जिसमें लकड़ी इकट्ठा करना, लट्ठ से घर बनाना, चटाई बुनना आदि दिया गया है, जो अलग-अलग हुनरों को दर्शाता है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (स्थानीय हुनर)

अध्यापक, पाठ में दिए गए स्थानीय हुनरों को विद्यार्थियों के साथ साझा करें। चित्रों के आधार पर जनजातियों के हुनरों पर बात करें और कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों को इन हुनरों से प्रशिक्षित करने का प्रयास करें। विद्यार्थियों को चटाई की बुनाई से परिचित कराएँ, क्योंकि चटाई, टोकरी, चारपाई आदि बनाना एक पारंपरिक हुनर है। ऐसे पारंपरिक

हुनरों को विद्यालय में कार्यानुभव के द्वारा सिखाया जा सकता है।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों की सृजन क्षमता को पहचानने एवं विकसित करने में विद्यालय एक सर्वोत्तम इकाई है। अध्यापक विद्यार्थियों की सृजन क्षमता में और विकास करने के लिए विभिन्न विषयों की पाठ्यवस्तु से हुनरों की पहचान कर पढ़ा सकते हैं। क्योंकि हुनर स्वयं की प्रतिभा है, जो सामान्यत: औपचारिक शिक्षा पर निर्भर नहीं है। फिर भी, बढ़ई, लुहार, कुम्हार, सुनार, हलवाई आदि के व्यवसाय के प्रति सम्मान पैदा कराना भी शिक्षा और अध्यापक का कर्तव्य है। इस लेख में उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत इतिहास विषय के शिक्षण-अधिगम में हुनरों की पहचान कर कक्षा में पढ़ाना और दैनिक जीवन से जोड़ना आदि से जुड़े कुछ उदाहरण दिए गए हैं। इन उदाहरणों से इतिहास शिक्षण को रोचक बनाने के साथ-साथ परंपरागत हस्तकला एवं हस्तशिल्पों के प्रति विद्यार्थियों की समझ विकसित की जा सकती है। जिसे वे भविष्य में अपनी आजीविका का साधन भी बना सकते हैं। यह *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो सकता है।

संदर्भ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *हमारे अतीत*, 1, कक्षा 6. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. *हमारे अतीत, 2*, कक्षा 7. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. *हमारे अतीत, 3*, कक्षा 8. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* 2005. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.